इसके अलावा उसने वैवाहिक संबंधों के माध्यम से अन्य राज्यों से मधुर संबंध बनाये। इसके अंतर्गत कोशल, वैशाली तथा मद्रकुल (पंजाब) तक राजनैतिक प्रतिष्ठा को बढ़ाया। वह अवन्ति महाजनपद को जीत न सका, तो उसने वहाँ के शासक चण्डप्रद्योत से मित्रता कर ली और मगध को (ईसा पूर्व छठी शताब्दी में) सबसे अधिक शक्तिशाली राज्य बना दिया। उसकी राजधानी राजगीर थी। उस समय इसे गिरब्रज कहते थे। जीवक इसका राजवैद्य था।

अपने पिता बिम्बिसार का वध करके अजातशत्रु ने मगध का सिंहासन संभाला। अजातशत्रु ने शासन विस्तार में आक्रामक नीति से काम लिया। उसने पिता की रिश्तेदारी का कोई लिहाज न रखा। उसने युद्धों के दौरान, नये युद्ध यंत्रों का इस्तेमाल किया। उसकी सेना के पास पत्थर फेंकने वाला **'महासिलाकटंक'** एक यंत्र था। उसके पास एक ऐसा रथ था, जिसमें गदा जैसा हथियार जुड़ा हुआ था। इससे युद्ध में लोगों को बड़ी संख्या में मारा जा सकता था। इस यंत्र को **'रथमूसल'** कहा जाता था।

अजातशत्रु के बाद उदयन मगध की गद्दी पर बैठा। इसके काल में मगध का साम्राज्य उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में छोटा नागपुर की पहाड़ियों तक फैला हुआ था। उसने गंगा और सोन नदी के संगम पर पाटलिपुत्र (पटना) को अपनी राजधानी बनाया।

मगध के सम्राटों का सबसे बड़ा शत्रु अवन्ति महाजनपद था। अवन्ति, उज्जैन का प्राचीन नाम है जो वर्तमान में मध्यप्रदेश का एक प्रमुख नगर है। उदयन और अवन्ति राज के बीच भी संघर्ष चला परन्तु अवन्ति महाजनपद की स्वतंत्रता बनी रही। बाद में शिशुनागवंश के राजाओं ने इसे जीत कर अपने साम्राज्य में मिला लिया गया। मगध साम्राज्य के विस्तार एवं उन्नति के निम्न कारण थे-

- इस क्षेत्र की भूमि उपजाऊ थी जिससे फसलों का अधिक उत्पादन होता था।
- मगध क्षेत्र में अत्यधिक लोहे के भण्डारों के कारण मगध की सेना ने उन्नत हथियार और औजारों का उपयोग किया।
- गंगा नदी में नौकाओं से व्यापार होता था अतः बंदरगाहों से व्यापारी काफी दूर-दूर तक आते-जाते थे।
- मगध सम्राटों की दोनों राजधानियां- राजगीर तथा पाटलिपुत्र अत्यधिक सुरक्षित थी।
- मगध की सेना के पास नये युद्ध यन्त्र थे जो अन्य सेनाओं के पास न थे।
- मगध सम्राटों के पास हाथियों की सबसे बड़ी सेना थी। पुराने जमाने में गजसेना को महत्वपूर्ण माना जाता था।

शिशुनाग वंश

शिशुनाग, काशी प्रदेश का शासक था। उसने उदयन के पुत्र नागदासक को सिंहासन से हटाकर अपने वंश की स्थापना की तथा वैशाली को अपनी राजधानी बनाया। उसकी सबसे बड़ी सफलता अवन्ति

(उज्जैन) के शासक को पराजित करने में थी। उज्जैन पर कब्जा करने में मगध को लगभग सौ साल का समय लगा। अब अवंति का क्षेत्र मगध साम्राज्य में मिल गया था।

नन्द वंश (लगभग ईसा पूर्व 363-342)

नन्द वंश का संस्थापक नन्द/नन्दिवर्धन था। पुराणों में इसे उग्रसेन भी कहा गया है। वह बड़ा योग्य, साहसी और प्रसिद्ध महत्वाकांक्षी साम्राज्यवादी सम्राट था। उसने मगध साम्राज्य का खूब विस्तार किया। उसके राजकोष में अपार धन-राशि होने के कारण उसे 'महापद्म' नंद भी कहते थे।

नन्द वंश के शासनकाल में ही सिकन्दर का भारत पर आक्रमण हुआ। सिकन्दर मकदूनिया (ग्रीस) का राजा था। वह विश्व विजय करना चाहता था। पश्चिमोत्तर सीमा से सिंधु नदी पार करके उसने भारत पर आक्रमण किया (ई.पू. 326) पंजाब के कुछ भाग पर उसने विजय प्राप्त की, किन्तु मगध के सम्राट की शक्ति के विषय में सुनकर उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। व्यास नदी के तट से ही सिकन्दर वापस लौट गया। जिन क्षेत्रों को उसने जीता था, वहाँ के प्रशासन के लिये उसने अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर दिये।

सिकन्दर के आक्रमण के परिणाम महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। इस घटना के कारण भारत और यूनान के बीच सीधा संपर्क स्थापित हो गया। परस्पर व्यापार बढ़ा। सिकन्दर के साथ आये यात्रियों ने महत्वपूर्ण भौगोलिक वर्णन किया है। उन्होंने सिकन्दर के अभियान का तिथि सहित वर्णन किया जिससे हमें बाद की घटनाओं को भारतीय कालक्रम को निश्चित आधार पर तैयार करने में सहायता मिलती है। नन्द की विशाल सेना में लगभग 20,000 घुड़सवार सैनिक, 2,00,000 पैदल सैनिक, 2000 रथ और लगभग 4000 हाथी थे। भारी संख्या में हाथी रखने के कारण ही मगध के राजा अधिक शक्तिशाली माने जाते थे। नन्द वंश के अंतिम शासक घनानंद का वध करके चन्द्रगुप्त ने मौर्य साम्राज्य की नींव डाली।

राजनैतिक व प्रशासनिक जीवन शैली

पंचमार्क सिक्के

इस काल में राजा का पद बहुत शक्तिशाली हो गया था। वह अपने राज्य का प्रशासन **आमात्य** (मंत्री), **पुरोहित** (धर्मगुरु), **संग्रहत्री** (कोषाध्यक्ष), **बलिसाधक** (कर वसूलने वाले), **शौल्किक** (चुंगी वसूलने वाला), **सेनापति** ग्रामीण आदि के द्वारा चलाता था। उसे परामर्श देने के लिए परिषद होती थी जिसके सदस्य ब्राह्मण रहते थे। योद्धा और पुरोहित कर से मुक्त होते थे। राजा किसानों से उनकी उपज का छठा भाग कर के रूप में प्राप्त करता था। व्यापारियों से माल की बिक्री पर चुंगी वसूली जाती थी। इस काल के सिक्के पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। ये प्राय: ताम्बे तथा चांदी के होते थे। इन्हें आहत या ठप्पे

लगे (पंचमार्क) सिक्के कहते हैं।

कस्बों को **पुर, नगर** तथा बड़े कस्बों को **महानगर** कहते थे। उज्जयिनी, श्रावस्ती, अयोध्या, काशी, कौशाम्बी, चंपा, राजगीर, वैशाली, प्रतिष्ठान, भृगुकच्छ प्रमुख नगर थे। मकान मिट्टी तथा पक्की ईटों के होते थे। नगर के चारों तरफ प्राचीर और विशाल प्रवेश द्वार होते थे।

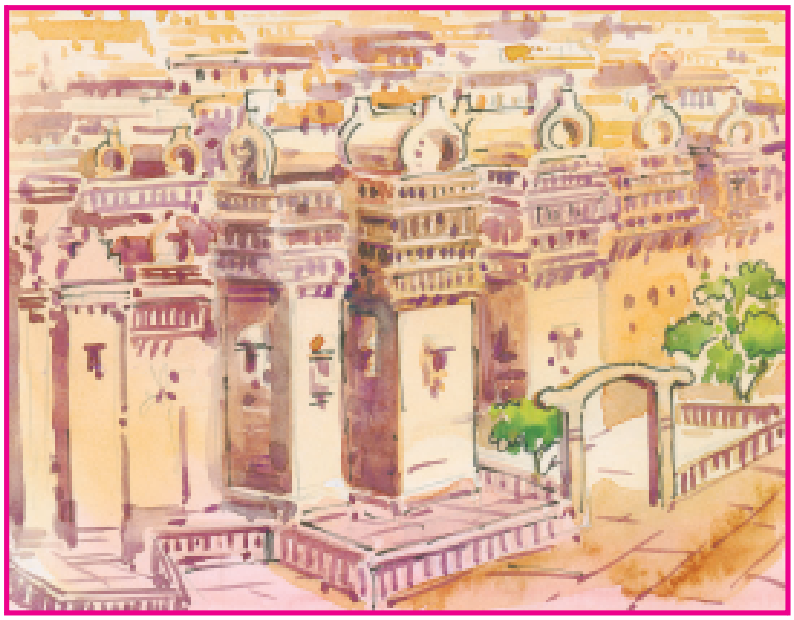

महाजनपदकालीन नगर

सामाजिक एवं धार्मिक जीवन

समाज में मुख्यत: चार वर्ण थे, परन्तु इस काल में अनेक जातियों का उदय होता भी दिखाई पड़ता है। बढ़ई, लुहार, सुनार, तेली, शराब बनाने वाले आदि जातियां बन गयी थीं। जाति जन्म से ही जानी जाती थी। कलाकारों और शिल्पकारों को संगठित किया गया। एक ही पेशे से जुड़े लोगों के संगठन को श्रेणी कहा जाता था।

धार्मिक कर्मकाण्ड और खर्चीले यज्ञों से लोग विमुख हो रहे थे। दो नये धर्मों का उदय हुआ था इनमें से एक बौद्ध धर्म है और दूसरा है जैन धर्म।

वर्धमान महावीर

महावीर का जन्म वैशाली गणराज्य में हुआ था। वर्धमान महावीर जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर थे। सत्य की खोज में उन्होंने 30 वर्ष की उम्र में ही घर छोड़ दिया। लगभग 12 वर्षों की साधना के बाद उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। ज्ञान प्राप्ति के बाद लगभग 30 वर्षों तक अपने उपदेशों का प्रचार करते रहे। अंत में लगभग 527 ई.पू. (पावापुरी) में 72 वर्ष की आयु में वर्धमान महावीर को मोक्ष प्राप्त हुआ।

वर्धमान महावीर

महावीर स्वामी की मुख्य शिक्षा

- हिंसा कभी नहीं करनी चाहिए।
- सत्य का पालन करना चाहिए।
- चोरी नहीं करना चाहिए।
- संग्रह नहीं करना चाहिए।
- ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।

गौतम बुद्ध

गौतम बुद्ध

गौतम बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। नेपाल के तराई क्षेत्र में, लुंबिनी वन नामक स्थान पर इनका जन्म हुआ। बचपन से ही गौतम का मन ध्यान और अध्यात्मिक चिन्तन की ओर था। 29 वर्ष की उम्र में ये घर से ज्ञान प्राप्त करने के लिए निकल पड़े। लगभग सात वर्षों तक भ्रमण के बाद बोध गया स्थान में, एक पीपल के वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। तब से वे बुद्ध अर्थात प्रज्ञावान कहलाने लगे। ज्ञान प्राप्ति के बाद बुद्ध ने अनेक वर्षों तक अपने सिद्धांतों का प्रचार किया। 483 ई.पू. वैशाख पूर्णिमा को कुशीनगर में बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ। बुद्ध की शिक्षाएँ इस प्रकार से हैं-

- दुख का कारण तृष्णा है, तृष्णा से मुक्त होकर ही निर्वाण प्राप्त किया जा सकता है।
- अष्टांगिक मार्ग* का पालन करने से दु:ख दूर हो सकते हैं।
- मनुष्य को पांच नैतिक नियम अपनाने चाहिए-
  - किसी प्राणी की हत्या नहीं करना चाहिए।
  - चोरी नहीं करना।
  - झूठ नहीं बोलना
  - मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना
  - व्याभिचार नहीं करना चाहिए।

आगे चलकर इन दोनों धर्मों ने बहुत उन्नति की। बौद्ध धर्म एशिया के विभिन्न देशों में पहुँच गया। जैन धर्म का भारत के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ।

---

* **अष्टांगिक मार्ग-** शुद्ध विचार, शुद्ध संकल्प, शुद्धवाणी, शुद्ध व्यवहार, शुद्ध जीवन, शुद्ध उपाय, शुद्ध ध्यान, शुद्ध समाधि का पालन करना।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए -

अ. जनपद किसे कहते हैं?

ब. दो गणसंघों के नाम लिखिए।

स. मगध साम्राज्य की स्थापना किसने की थी?

द. महाजनपद काल के चार प्रमुख नगरों के नाम लिखिए।

य. अजातशत्रु कौन था?

र. महाजनपद किसे कहते हैं?

ल. आहत सिक्के किसे कहते हैं?

व. गणसंघ तथा जनपद क्या है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

अ. बिम्बिसार कौन था? उसने अपना साम्राज्य विस्तार कैसे किया?

ब. मगध साम्राज्य के विस्तार के प्रमुख कारण लिखिए।

स. गौतम बुद्ध का जीवन परिचय लिखते हुए उनके प्रमुख उपदेश लिखिए।

द. महावीर स्वामी का जीवन परिचय लिखते हुए उनकी प्रमुख शिक्षाओं को लिखिए।

य. महाजनपदयुगीन प्रशासन व जीवन शैली के बारे में लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. नन्दवंश के शासन काल में ..... का भारत पर आक्रमण हुआ।

ब. शिशुनाग ..... का शासक था।

स. महावीर का जन्म ..... में हुआ था।

4. कोष्ठक में दिए शब्दों में से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

अ. बिम्बिसार ..... वंश का था। (हिरण्यक/मौर्य)

ब. चण्डप्रद्योत ..... महाजनपद का शासक था। (अवन्ति/अंग)

स. बुद्ध का जन्म ..... नामक स्थान पर हुआ था। (लुंबिनी/वाज्जि)

❖❖❖❖

पाठ 12

मौर्य साम्राज्य

आइए सीखे

- मौर्य साम्राज्य का उदय कैसे हुआ?
- मौर्य काल के राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन की विशेषताएँ क्या थी?
- मौर्यकालीन कला, संस्कृति तथा साहित्य की विशेषताएँ क्या थी?

पिछले पाठ में आपने जनपद, महाजनपद और मगध साम्राज्य के उत्कर्ष के बारे में पढ़ा है। आप यह भी जानते हैं कि नन्द राजाओं के समय सिकन्दर ने कई देशों को जीतकर अपना साम्राज्य विस्तृत किया था। तब मगध पर नन्द वंश के शासक महापद्म नन्द का शासन था। नन्द राजा के पास अपार सम्पत्ति थी और वह भारत का शक्तिशाली राज्य माना जाता था। परन्तु नन्द राजा बहुत ही क्रूर शासक था इसलिए वह जनता में लोकप्रिय नहीं था। नन्द राजा से सत्ता छीनने का कार्य चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया।

चन्द्रगुप्त ने चाणक्य (कौटिल्य) के सहयोग से नन्द राजा को गद्दी से हटाने की योजना बनाई। सिकन्दर के वापस लौट जाने के बाद, चन्द्रगुप्त ने पंजाब की असंतुष्ट जातियों को संगठित कर यूनानियों को भारत से खदेड़कर पूरे पंजाब पर अधिकार कर लिया और नन्द राजवंश का तख्ता पलट कर 322 ई.पू. में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र (बिहार में स्थित वर्तमान पटना)थी।

जब राजा अपने राज्य की सीमा का अत्यधिक विस्तार कर लेते है तो उनके राज्यों को साम्राज्य कहा जाता है।

इसके बाद चन्द्रगुप्त मौर्य ने सिकन्दर द्वारा (सिन्धु व अफगानिस्तान क्षेत्र के) नियुक्त प्रशासक सेल्युकस को हराया और इस क्षेत्र को अपने राज्य में मिला लिया। चन्द्रगुप्त से पराजित होने के बाद सेल्युकस ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से किया तथा मेगस्थनीज को अपना राजदूत बनाकर पाटलिपुत्र भेजा। मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक 'इण्डिका' में उस समय के समाज का वर्णन किया है।

बिन्दुसार

यह चन्द्रगुप्त का पुत्र था तथा अपने पिता द्वारा गद्दी पर बैठाया गया था। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य अंतिम दिनों में जैन मुनि हो गया था। बिन्दुसार ने मैसूर तक अपने राज्य का विस्तार किया। कलिंग और सुदूर दक्षिण के कुछ राज्यों को छोड़कर लगभग सारा देश उसके साम्राज्य में सम्मिलित था। दक्षिण के राज्यों से बिन्दुसार की मित्रता थी। इस कारण उन पर उसने हमले नहीं किये। परंतु कलिंग (वर्तमान उड़ीसा का एक भाग) के लोग मौर्य साम्राज्य के साथ नहीं रहना चाहते थे। इसलिये मौर्यों ने उन पर आक्रमण किया। यह काम चन्द्रगुप्त के पौत्र अशोक ने किया।

सम्राट अशोक एवं उसका हृदय परिवर्तन

सम्राट अशोक मौर्य वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक हुआ था। उसे अपने दादा चन्द्रगुप्त और पिता बिन्दुसार से एक विशाल और सुव्यवस्थित साम्राज्य विरासत में मिला था। अशोक ने कलिंग राज्य को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाने का निश्चय किया। अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में उसने कलिंग पर विजय प्राप्त की । युद्ध में दोनों ही सेनाओं को भारी नुकसान हुआ। एक लाख सैनिक मारे गये तथा लाखों लोग घायल हुए। भीषण नरसंहार और जनता के कष्ट के दृश्य को देख अशोक का मन विचलित हो गया।

युद्ध में अकारण मारे गये लोगों तथा घायल सैनिकों की पीड़ित स्त्रियों और बच्चों को देखकर भी उसे बड़ी पीड़ा हुई। उसने भविष्य में कभी युद्ध न करने का प्रण किया। सम्राट अशोक ने अपने तीस साल

के शासन में कलिंग युद्ध के बाद कोई युद्ध नहीं लड़ा। उसने लोगों को शांतिपूर्वक रहने की शिक्षा दी। उसका विशाल साम्राज्य सुदूर दक्षिण को छोड़कर पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में था। अशोक ने इतने बड़े साम्राज्य पर शांतिपूर्वक और धर्म पर चलते हुये शासन किया। उसने लोगों को अनेक संदेश दिये, जो आज भी चट्टानों, स्तंभों, शिलाओं पर खुदे (देखे जा सकते) हैं।

ये शिलालेख पत्थरों तथा स्तंभों पर खुदवाकर ऐसे स्थानों पर लगवाए गए जहां लोग एकत्रित होकर उन्हें पढ़े और शिक्षा ग्रहण करें। अशोक के शिलालेख ब्राह्मी, खरोष्ठी व अरेमाइक लिपि में मिलते हैं। इनकी भाषा प्राकृत है। ब्राह्मी लिपि भारत में, खरोष्ठी लिपि पाकिस्तान क्षेत्र में तथा अरेमाइक लिपि अफगानिस्तान क्षेत्र में प्रचलित थी। अत: शिलालेखों में आम जनता की भाषा व लिपि का प्रयोग किया गया ताकि वे अपने सम्राट के विचारों को समझे।

अशोक का धर्म- कलिंग युद्ध के परिणामस्वरूप सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया। उसने युद्ध त्याग करके 'धम्म विजय' का मार्ग अपनाया। बाद में अशोक बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया था। वह ऊँचे मानवीय आदर्शों में विश्वास करता था, जिससे लोग सदाचारी बने और शांति से रहे। इन्हें उसने 'धम्म' कहा। संस्कृत के धर्म शब्द का प्राकृत रूप 'धम्म' है। धर्म को राजाओं के माध्यम से सभी प्रांतों में शिलालेखों के रूप में खुदवाया। अशोक चाहता था कि सभी धर्मों के लोग शांतिपूर्वक रहें। छोटे, बड़ों की आज्ञा माने। बच्चे, माता-पिता का कहना सुने। मालिक अपने नौकरों से अच्छा व्यवहार करे। वह मनुष्य और पशु दोनों की हत्या का विरोधी था। उसने धार्मिक अनुष्ठानों में पशु-बलि पर रोक लगा दी। अशोक चाहता था कि लोग मांस न खाये इसलिये उसके खुद के रसोई घर में प्रतिदिन पकाएं जाने वाले हिरण और मोर के मांस पर रोक लगा दी।

अशोक का प्रशासन- अशोक अपनी प्रजा की अपने बच्चों की तरह देखभाल करता था। उसने प्रजा की भलाई के अनेक कार्य किए जैसे-

- पुरों व नगरों को एक-दूसरे से जोड़ने के लिए अच्छी सड़कें बनवाई ताकि लोग सरलता से यात्रा कर सकें।
- राहगीरों को तेज धूप से बचाव के लिये सड़कों के दोनों ओर छाया व फलदार वृक्ष लगवाएं।
- पानी के लिये कुएं, बावड़ी, बाँध बनवाये।
- यात्रियों के रुकने के लिए अनेक धर्मशालाएं बनवाई।
- रोगियों के लिए चिकित्सालय खुलवाए एवं नि:शुल्क औषधियों को देने की व्यवस्था करवाई।
- पशुओं एवं पक्षियों के लिये अलग से चिकित्सा केंद्रों का प्रबंध किया इन्हें पिंजरापोल कहा जाता था।

राजधानी पाटलिपुत्र में प्रशासन के प्रत्येक विभाग के अध्यक्ष रहते थे। सम्राट को सलाह देने के लिए 'मंत्रि-परिषद्' थी। साम्राज्य को चार प्रांतों में बांटा गया था। प्रत्येक प्रान्त का शासन एक राज्यपाल सँभालता था, जो अधिकतर राजकुमार होता था।

प्रत्येक प्रान्त को जिलों में बांटा गया था तथा जिलों में गाँवों को सम्मिलित किया गया था। राजाज्ञा

के पालन व कानून व्यवस्था के लिए कई अधिकारी थे। कुछ अधिकारी कर वसूली का काम करते थे और कुछ न्यायाधीश होते थे। गांवों में अधिकारियों के दल होते थे। जो पशुओं का लेखा-जोखा रखते थे। नगरों की व्यवस्था को नगर परिषदें देखती थी।

इन अधिकारियों के अलावा उसने 'धर्म महामात्य' भी नियुक्त किये थे, जो घूम-घूम कर लोगों की समस्याएं सुनते, स्थानीय कामों की जांच-पड़ताल करते और लोगों को धर्मानुसार आचरण करने और मेल-जोल से रहने की प्रेरणा देते थे।

पड़ोसी देशों से संबंध- सम्राट अशोक ने दूर-दूर तक के राज्यों में अपने धर्मदूत भेजे तथा उनसे मित्रता की। उसने श्रीलंका में धर्म प्रचार के लिए अपने पुत्र महेन्द्र एवं पुत्री संधमित्रा को भेजा। श्रीलंका के राजा ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया। इसी तरह दूसरे कई देशों के लिए उसने अपने दूत भेजे थे।

मौर्यकालीन समाज - मेगस्थनीज ने अपनी पुस्तक 'इंडिका', में जो कि यूनानी भाषा में लिखी थी, इसमें उस समय के भारतीय समाज का वर्णन है जैसे, अधिकतर लोग खेती करते थे और लोग सुखपूर्वक गाँवों में रहते थे। चरवाहे और गड़रिये भी गाँव में ही रहते थे। बुनकर, बढ़ई, लोहार, कुम्हार और अन्य कारीगर नगरों में रहते थे। ये राजा के उपयोग की वस्तुएं तथा नागरिकों के लिए सामान बनाते थे। व्यापार उन्नति पर था और व्यापारी दूर-दूर तक अपना माल बेचने जाया करते थे। ये लोग समुद्र के पार फारस की खाड़ी होते हुए पश्चिमी देशों को जाते थे। बड़ी संख्या में लोग सेना में भर्ती होते थे। सैनिकों को अच्छा वेतन मिलता था। समाज में ब्राह्मण, जैन और बौद्ध भिक्षुओं का सम्मान किया जाता था। इस काल में चांदी सोने व तांबे के सिक्के चलते थे। पर्दा प्रथा नहीं थी। जीवन सरल सुखद व मितव्ययिता पूर्ण था।

मध्यप्रदेश में मौर्यकाल के स्तूप साँची, भरहुत (सतना), सतधारा, तुमैन (जिला गुना), बरहट (जिला रीवा), उज्जैन आदि जगहों पर बने हैं। अशोक का साँची स्तूप, जिस पर चार सिंह बने हैं, अब साँची के संग्रहालय में रखा है। अशोक के स्तंभ लेख साँची व बरहट से मिले हैं तथा शिलालेख दतिया के पास गुजर्रा गाँव तथा भोपाल के पास पानगुराड़िया (नचने की तलाई) स्थान पर है। जबलपुर के निकट रूपनाथ स्थल से अशोक का लघु शिलालेख मिला है। साँची के बौद्ध स्मारक विश्व प्रसिद्ध है। इसे विश्वदाय भाग में सम्मिलित किया गया है। उज्जैन में अशोक 11 वर्ष अवन्ति का गवर्नर रहा, उसके पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संधमित्रा का जन्म उज्जैन में हुआ था। अशोक की एक रानी विदिशा की थी।

- ❖ मेगस्थनीज यूनानी लेखक था। वह अवोशिया के क्षत्रप (शासक) के साथ रहता था और वहां से वह सेल्यूकस द्वारा अपना राजदूत बनाकर चन्द्रगुप्त मौर्य की राजसभा में पाटलिपुत्र भेजा गया था।
- ❖ सारी दुनिया ने भारत से अंक तथा दशमलव प्रणाली सीखी। अरबों ने भारत से सीखा तथा यूरोपवासियों को सिखाया।
- ❖ भारत से बौद्ध धर्म चीन पहुँचा। वहां से यह धर्म कोरिया और जापान गया।

मौर्य कला - अशोक ने अपने संदेश चमकीली शिलाओं तथा स्तंभों पर खुदवाएं। स्तंभों के शीर्ष पर हाथी, साँड या सिंह की प्रतिमा बनाई गई थी। सारनाथ के स्तंभ पर चार सिंहों की आकृति बनी हुई

है। ये स्तंभ आज भी देखे जा सकते हैं। सन् 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद अशोक के सारनाथ स्तंभ की चार सिंहों वाली कलाकृति को राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में अपनाया गया। यह सिंह स्तंभ आज सारनाथ के संग्रहालय में रखा है। इस काल में कई स्तूप, स्तंभ तथा भिक्षुओं के रहने के लिए बिहार व पर्वतों को काटकर गुफाएं बनवायी गयी। मूर्तियों में यक्ष और यक्षणी तथा पशुओं की मूर्तियाँ बनायी गयी थीं।

मौर्य साम्राज्य का पतन- सम्राट अशोक और उसके पूर्वजों द्वारा स्थापित विशाल मौर्य साम्राज्य लगभग सौ वर्षों से कुछ अधिक समय तक चलता रहा और अशोक की मृत्यु होने के पश्चात वह छिन्न-भिन्न होने लगा। इतने विशाल साम्राज्य में दूर-दूर तक सम्पर्क व प्रशासन करने में कठिनाइयाँ होतीथी। अशोक के उत्तराधिकारी उसकी तरह कुशल और योग्य नहीं थे। विशाल साम्राज्य के संचालन के लिए आवश्यक राशि भी कर के रूप में वसूल नहीं कर पा रहे थे। वे राजा जो अशोक के अधीन थे, अब स्वतंत्र होने लगे। इस प्रकार साम्राज्य कमजोर होता चला गया। फूट का परिणाम यह हुआ कि बैक्ट्रीया देश के यूनानी शासक ने पश्चिमोत्तर भाग पर हमला कर दिया। उस क्षेत्र के राजा को किसी अन्य राजा ने सहायता नहीं दी और वह पराजित हुआ। 185 वर्ष ई.पू. में पुष्यमित्र शुंग ने अंतिम मौर्य शासक वृहद्रथ का वध कर मौर्य साम्राज्य का अंत कर दिया और शुंग वंश की स्थापना हुई।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन कैसे हुआ?

ब. अशोक की किस कलाकृति को राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में अपनाया गया है?

स. अशोक के शिलालेख कौन सी लिपि में मिलते हैं?

द. धर्म महामात्य क्या काम करते थे?

य. सम्राट को सलाह कौन देता था?

र. साम्राज्य किसे कहते हैं?

ल. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की?

व. अशोक किस धर्म को मानता था?

श. अशोक ने अपने पुत्र-पुत्री को किस देश में धर्म प्रचार के लिए भेजा था?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तार से उत्तर लिखिए-

अ. चन्द्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य विस्तार के बारे में वर्णन कीजिए।

ब. मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों को लिखिए।

स. सम्राट अशोक ने प्रजा की भलाई के लिए कौन-कौन से कार्य किए?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. मौर्य साम्राज्य की राजधानी ..... थी।

ब. अशोक ..... धर्म का अनुयायी था।

स. चन्द्रगुप्त के गुरु का नाम ..... था।

द. ..... चन्द्रगुप्त के राज्य में यूनानी राजदूत था।

4. सही जोड़ी बनाइए-

	क	ख
अ.	मेगस्थनीज की पुस्तक	साँची, सतधारा
ब.	बौद्ध स्तूप	सारनाथ
स.	गुर्जरा शिलालेख	इंडिका
द.	चार सिंहों वाला स्तंभ	दतिया

प्रोजेक्ट कार्य

- नोटों, सिक्को, डाक टिकटों पर अशोक चिन्ह को देखिए और लिखिए उसमें आपको क्या-क्या दिखाई देता है।

❖❖❖❖

पाठ 13

समुदाय एवं सामुदायिक विकास

आइए सीखें

- समुदाय का क्या अर्थ है?
- सामुदायिक विकास व जनसहयोग क्या हैं?
- जनसहयोग प्राप्त करने की दिशा में नगर/ग्राम स्तर की विभिन्न समितियों की जानकारी एवं उनके कार्य क्या हैं?
- सामाजिक समरसता के विकास में समुदाय का क्या महत्व है।

समुदाय का अर्थ

कोई भी गाँव, प्रान्त व देश अपने आप में समुदाय है। इस समुदाय में विभिन्न जाति व धर्म के लोग एक साथ रहते हैं। ये अपनी-अपनी प्रथाओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों के अनुसार तीज-त्यौहार आदि मनाते हैं तथा विवाह आदि संस्कार करते हैं।

कई परिवार एक-दूसरे के पास रहते हुए समुदाय की रचना करते हैं, अत: समुदाय को परिवारों का परिवार भी माना जाता है।

समुदाय एक ऐसा सामाजिक समूह हैं, जिसमें कुछ अंशों में 'हम' की भावना पाई जाती है। समुदाय का निवास स्थान व क्षेत्र निश्चित होता है।

समुदाय की विशेषताएँ

एक समुदाय की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं, इनमें से कुछ विशेषताएँ इस प्रकार है-

- समुदाय व्यक्तियों का समूह होता है।
- कोई भी गाँव, प्रान्त, देश अपने आप में समुदाय है।
- समुदाय अपना विकास स्वत: करता है।
- समुदाय में विभिन्न जाति व धर्म के लोग एक साथ रहते हैं।
- समुदाय द्वारा किया गया कोई भी कार्य स्थाई प्रकार का होता है।
- समुदाय अपने सदस्यों में अपनेपन और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देते हैं।

- समुदाय के सदस्य एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होते हैं।
- समुदाय एक आत्मनिर्भर समूह होता है।

सामुदायिक विकास व जनसहयोग

मनुष्य परिवारों में रहते हैं और बढ़ते हैं। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य परिवारों में रहते हैं। कई परिवार एक-दूसरे के पास रहते हुए समुदाय बनाते हैं। समुदाय में शामिल परिवार अलग-अलग व्यवसाय करते हुए भी एकजुट रहते हैं। व्यवसाय की दृष्टि से मनुष्य क्रमश: धीरे-धीरे उन्नति कर विभिन्न अवस्थाओं अर्थात शिकारी, कंदमूल व फल संग्रहित करने, पशुपालन आदि स्थितियों से गुजर कर वह स्थाई किसान बना। उसने गाँव और नगर बसाए। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं (भोजन, आवास व वस्त्र) से आगे के विषय में सोचने लगा। मनुष्य के निवास स्थानों में प्राकृतिक विविधता के कारण उसकी जीवन शैली, व्यवसाय, रीति-रिवाज, त्यौहार, पहनने-ओढ़ने का ढंग, खान-पान की आदतों में भी परिवर्तन होता गया। स्थानीय प्रतिकूलताओं के बावजूद भी लोगों ने अपना सामुदायिक जीवन स्वत: विकसित कर लिया।

जन सहयोग

जन सहयोग से हमारा आशय, स्थानीय सामुदायिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए स्थानीय लोगों द्वारा सहयोग प्रदान करना है।

समुदाय के विकास के लिए स्थानीय लोगों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। यह ग्रामीण और शहरी समुदाय दोनों के लिए उपयुक्त है। ऐसा इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे अपनी परिस्थितियों से परिचित हैं और स्थानीय जरूरतों को भली-भांति समझते हैं। यह उनके स्वयं के हित में है, कि वे एक साथ मिलजुल कर अपनी समस्याओं का हल निकालें। जैसे क्षेत्र में पेयजल या शिक्षा या अस्पताल जैसी मूल एवं मानवीय व्यवस्थाएँ नहीं हैं तो वे उसके लिए उचित अथवा वैकल्पिक उपाय करें। वे अपनी समस्याओं को स्वयं सुलझा सकें तथा किसी पर आश्रित न रहें। इस प्रकार लोगों में आत्मनिर्भरता की भावना का विकास होगा।

जन सहयोग द्वारा लोगों में अपनी दशा सुधारने का उत्साह पैदा होता है। जनसहयोग से राज्य व केंद्रीय सरकारों के कार्यभार को बाँटने में सहायता मिलती है।

ग्राम/नगर स्तरों पर विभिन्न समितियाँ

सामुदायिक विकास में स्थानीय नागरिकों की भूमिका बहुत जरूरी है। सामुदायिक विकास के लिए जन सहयोग प्राप्त करने की दिशा में ग्राम पंचायत व नगर स्तर पर विभिन्न समितियों की स्थापना की गई है। इन समितियों के माध्यम से प्रजातंत्र में सत्ता का विकेन्द्रीकरण नीचे के स्तर (केंद्र से ग्राम/नगर) तक किया गयाहै।

ग्राम स्वराज व्यवस्था के अंतर्गत 26 जनवरी 2001 से ग्राम स्वराज की स्थापना की गई है।

ग्राम/नगर स्तर पर निम्नलिखित समितियों का गठन केंद्र अथवा राज्य सरकार से प्राप्त निर्देशों के अनुसार किया जाता है-

1. ग्राम/नगर विकास समिति
2. सार्वजनिक सम्पदा समिति
3. कृषि समिति
4. स्वास्थ्य समिति
5. ग्राम/नगर रक्षा समिति
6. अधो संरचना समिति
7. शिक्षा समिति
8. सामाजिक न्याय समिति

उपरोक्त समितियों के माध्यम से स्थानीय निवासियों में जागरूकता पैदा कर सामुदायिक विकास के लिए जन सहयोग की भावना विकसित करने के अवसर प्रदान किये गये हैं।

वर्तमान में जिन क्षेत्रों में जनसहयोग की विशेष आवश्यकता है। उन क्षेत्रों में कार्य करने वाली समितियों का परिचय इस प्रकार है-

(1) ग्राम/वार्ड शिक्षा समिति-

इस समिति का कार्य ग्राम/वार्ड में बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था में अपना सहयोग देना है। यह समिति विद्यालय के प्रबंधन में भी सहयोग देती है।

(2) ग्राम/वार्ड रक्षा समिति-

यह समिति ग्राम या वार्ड में लोगों की सुरक्षा संबंधी कार्यों में सहयोग करती है। साथ ही यह समिति अपराधों की रोकथाम में पुलिस प्रशासन का सहयोग करती है।

(3) पालक-शिक्षक संघ-

मध्यप्रदेश में जन शिक्षा अधिनियम के अंतर्गत प्रदेश के प्रत्येक शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय में पालक शिक्षक संघ (अब इसे शाला प्रबंधन समिति के नाम से जाना जाता है) का गठन किया गया है। यह संघ विद्यालयों में बच्चों के शत-प्रतिशत प्रवेश, उनकी विद्यालयों में नियमित उपस्थिति, बच्चों के लिये विद्यालयों में मध्यान्ह भोजन व्यवस्था, बच्चों की शैक्षिक प्रगति, विद्यालयों में शिक्षकों की समुचित व्यवस्था एवं सहायता करने हेतु कार्य करती है।

सामाजिक समरसता के विकास में समुदाय का महत्व-

आदिकाल से ही भारत देश विभिन्न धर्मों, जातियों, जनजातियों की कर्मभूमि रहा है। जाति प्रथा,

ग्राम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, संस्कार व्यवस्था हमारे भारतीय समाज का प्रमुख आधार रहे है।

सामाजिक समरसता-

समाज में व्यक्तियों का एक-दूसरे के सुख-दु:ख में समान रूप से शामिल होना, व्यवसाय, धर्म (पंथ) अलग-अलग होने के बावजूद एक-दूसरे के समारोहों में शामिल होना तथा मिल-जुलकर रहना सामाजिक समरसता के उदाहरण है।

समुदाय में किसान, बुनकर, दर्जी, बढ़ई, लोहार, दुकानदार, मजदूर आदि होते हैं। समुदाय में आजकल नर्सों, डाक्टरों, अध्यापकों, पुलिस, विद्युतकर्मियों आदि की सेवाओं की भी आवश्यकता होती है। समुदाय में प्रत्येक परिवार अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने की कोशिश करता है तथा दूसरे परिवारों की सहायता भी करता है। समुदाय इस प्रकार पारस्परिक आर्थिक निर्भरता को बढ़ावा देता है। यह परिवार के सदस्यों को सामाजिक भलाई के लिए सहयोग देता है। समुदाय अपने सदस्यों में सामाजिक समरसता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देता है।

समुदाय में सदस्य सार्वजनिक सुविधाओं को बांटते हैं। अधिक महत्वपूर्ण यह है कि वे एक-दूसरे के सुख-दु:ख में भागीदार होते हैं।

समुदाय का महत्व-

व्यक्ति या समुदाय परस्पर संपर्क में आकर एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। संपर्कों के कारण एक दूसरे के रीति-रिवाजों, विश्वासों, परम्पराओं एवं सांस्कृतिक भिन्नताओं को समझने व उनका आदर करने में मदद मिलती है।

समुदायों के निवास के क्षेत्र बदलने से जीवनयापन के तौर-तरीकों में बदलाव आ जाता है।

वर्तमान में ग्रामीण/शहरी समुदायों में परिवर्तन एवं विकास के चिन्ह दिखाई पड़ रहे हैं। जैसे ग्रामों में संचार एवं विद्युत की सुविधाएँ बढ़ना, पक्के मकान, पक्की सड़कों का विकास, यातायात सुविधाओं का विस्तार आदि। समुदाय के विकास में शिक्षा के प्रसार एवं प्रभाव ने भी असर दिखाया है। इससे समुदाय का महत्व बढ़ा है।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. परिवारों का परिवार किसे माना जाता है?

ब. जन सहयोग क्या है?

स. सामाजिक समरसता से आप क्या समझते हैं?

द. ग्राम एवं नगर स्तर पर गठित विभिन्न समितियों के नाम लिखिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. समुदाय का क्या अर्थ है? समुदाय की कोई तीन विशेषताएं बताइये।

ब. समुदाय के विकास में स्थानीय लोगों की भागीदारी का क्या महत्व है?

स. पालक शिक्षक संघ के विषय में लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

अ. समुदाय ..... का समूह होता है।

ब. जन्म से मृत्यु तक मनुष्य ..... में रहते हैं।

स. ..... से राज्य व केंद्रीय सरकारों के कार्यभार को बांटने में सहायता मिलती है।

द. ग्राम स्वराज की स्थापना ..... से की गई।

य. समुदाय अपने सदस्यों में ..... और ..... की भावना को बढ़ावा देता है।

4. निम्नलिखित में से असमान छांटिए-

अ. (i) शिक्षा समिति (ii) समुदाय (iii) रक्षा समिति (iv) पालक शिक्षक संघ

ब. (i) गाँव (ii) प्रान्त (iii) वन (iv) देश

प्रोजेक्ट कार्य

- जनभागीदारी के कार्य करते हुए शहरों अथवा गांवों के लोगों के कुछ चित्र एकत्रित कीजिए।
- लोगों द्वारा किए गये किसी एक जनभागीदारी के कार्य के बारे में लिखिए।

❖❖❖❖